6 सन्धि प्रकरणम्

दो वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को **सन्धि** कहते हैं। सन्धि के तीन भेद हैं।

(क) स्वर सन्धि (ख) व्यञ्जन सन्धि (ग) विसर्ग सन्धि

(क) स्वर सन्धि—जब दो स्वरों के मेल से कोई परिवर्तन होता है तो उसे **स्वर सन्धि** कहते हैं। स्वर सन्धि के उपभेद हैं—दीर्घ गुण, वृद्धि, अयादि, यण्, पूर्वरूप।

कक्षा सात की पुस्तक में हम स्वर-सन्धि विस्तार से पढ़ चुके हैं। यहाँ इसका संक्षिप्त अभ्यास करेंगे।

1. दीर्घ सन्धि—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ और ऋ, ॠ के आगे समान वर्ण आ जाएँ तो दोनों को मिलाकर (दीर्घ वर्ण) हो जाता है।

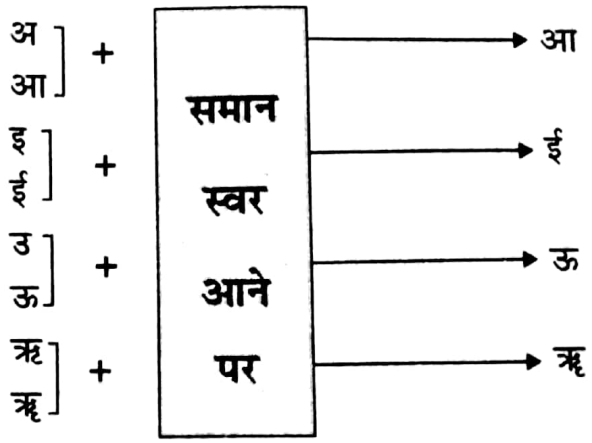

यथा:—

हिम + आलय: = हिमालय:	गुरु + उपदेश: = गुरूपदेश:	मुनि + इन्द्र: = मुनीन्द्र:
वधू + उत्सव: = वधूत्सव:	भानु + उदय: = भानूदय:	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
मातृ + ऋणम् = मातृणम्	सु + उक्तय: = सूक्तय:	प्रधान + आचार्य: = प्रधानाचार्य:
पितृ + ऋणम् = पितृणम्		

2. गुण सन्धि—अ, आ, से परे इ, ई, उ, ऊ, ऋ या ॠ आ जाएँ तो अ + इ = ए, अ + उ = ओ, अ + ऋ = अर् गुण होता है।

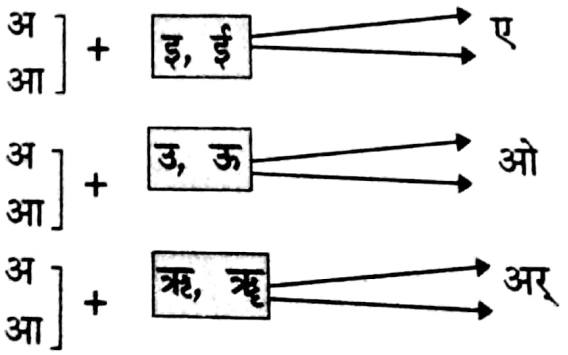

यथा:—

नर + इन्द्र: = नरेन्द्र:	जल + ऊर्मि: = जलोर्मि:	महा + ईश: = महेश:
देव + ऋषि: = देवर्षि:	लता + इव = लतेव	सप्त + ऋषि: = सप्तर्षि:
चन्द्र + उदय: = चन्द्रोदय:	ग्रीष्म + ऋतु: = ग्रीष्मर्तु:	हित + उपदेश: = हितोपदेश:
वर्षा + ऋतु: = वर्षार्तु:		

Scanned with CamScanner

3. वृद्धि सन्धि—अ आ से परे ए ऐ, ओ औ आ जाएँ तो ऐ और औ वृद्धि हो जाती है।

अ, आ + ए, ऐ → ऐ

अ, आ + ओ, औ → औ

यथा:—

सदा + एव = सदैव	महा + ऐरावत: = महैरावत:	मम + एव = ममैव
गंगा + ओध: = गंगौध:	सर्वदा + एव = सर्वदैव	महा + ओषधि: = महौषधि:
मम + ऐश्वर्यम् = ममैश्वर्यम्	महा + औषधम् = महौषधम्	मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्
महा + औदार्यम् = महौदार्यम्		

Scanned with CamScanner